NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

अंजीर की वैज्ञानिक खेती

विकाश कुमार[1], धर्मेन्द्र कुमार गौतम[1] और साक्षी[2]

परिचय:

इस फल की उत्पत्ति का स्थान अरब का दक्षिणी क्षेत्र माना गया है। विश्व मे इसकी खेती मुख्यतया भूमध्य सागरीय देशों में की जाती है। इसकी खेती के लिये इटली, ग्रीस, पुर्तगाल एवं अलजीरिया आदि प्रमुख है। भारत में महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश में लखनऊ तथा गुजरात के कुछ भागो में इसकी खेती की जाती है और इसके आगे बढ़ने की सम्भावनायें है। वैसे भारतीय साहित्य में इस फल का विवरण हजारों वर्षो से रहा है। जो कि इसी फल की दूसरी जाति गूलर के नाम से उल्लिखित है। भारत वर्ष में अंजीर के अन्तर्गत लगभग 400 हैक्टर क्षेत्र है।

मौरेसी वशं का यह पौधा फाइकस कैरीका के वानस्पतिक नाम से जाना जाता है। इस वशं में ऐसी अनेक जातियां है जिन के फल खाने लायक होते है परन्तु उद्यान के क्षेत्र में उनका प्रचलन बहुत कम है। जैसे गूलर, बरगद, पीपल आदि है। जिन के फलों को आदिवासी लोग खाते है।

जलवायु

यह पौधा उष्ण और सम–शीतोष्ण होने पर भी पतझड़ का स्वभाव वर्तता है। अंजीर उत्तर भारत के कड़ाके की सर्दी सुशुप्तावस्था में हो जाता है तथा ज्यों ही बसंत का आगमन होता है, इसमें नवीन वृद्धि दिखाई देती है। परन्तु पश्चिमी भारत में इसकी सुशुप्तावस्था अगस्त–सितम्बर में ही आती है और अक्टूबर में नये कल्ले दिखाई पड़ते है।

पौधों अनुभवों से यह तथ्य पूर्णतः प्रमाणित है कि अंजीर के फलो ंको पकने के लिये हल्का गरम मौसम होना आवश्यक है। पौधे के वानस्पतिक स्वाभाव से यह निश्चित

विकाश कुमार[1], शोध छात्र (उद्यान) फल विज्ञान विभाग, बाँदा कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा
धर्मेन्द्र कुमार गौतम, एम. एससी छात्र (उद्यान) फल विज्ञान विभाग, बाँदा कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा
साक्षी[2], शोध छात्रा (उद्यान) फल विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

इसी प्रकार से यदि फल की परिपक्वता के समय वर्षा हो जाती है तथा ठंडी हवा ये चलती है तो रोगल लगने एवं फलों को ठंडक से सूख जाने का भारी डर रहता है।

भूमि

वैसे अंजीर का पौधा विभिन्न प्रकार की मृदाओं में उगाया जा सकता है। फिर भी अच्छी वानस्पतिक वृद्धि एवं उपज हेतु भारी मिट्टी अंजीर के लिये अत्यन्त लाभप्रद है। रेतीली भूमि में यदि पानी की सुविधा हो तो भी यह पौधा उग सकता है। साथ जीवांश्म की आवश्यकता को भी इसकी उत्तम बागवानी हेतु ध्यान में रखना चाहिये। पानी का उचित निकास भी सफल खेती के लिये अति आवश्यक है।

प्रवर्धन

अंजीर के पौधे का कायिक प्रवर्धन मुख्यतः काष्ठीय कलमों द्वारा आसानी से किया जा सकता है। ये कलमें 22 से0 मी0 लम्बी, 1.5 से0मी0 मोटी तथा परिपक्व अवस्था में होती है। भारत में जलवायु के परिवर्तन के अनुसार जुलाई से नवम्बर तक इन कलमों को तैयार क्यारियों में लगाते है। पौधा लगाते समय ध्यान रहे कि कलम की कम से कम एक कलिका अवश्य ऊपर रहे। औद्यानिक प्रयोग आवश्यक हो गये है कि अंजीर के पौधे को एक अच्छा मूल वृन्त चाहिये क्योकि अंजीर सूत्रकृमि से बहुत शीघ्र ही प्रभावित हो जाता है। इस उपचा रहे तुफाइक सग्लूमेरेटा एक अच्छा मूलवृन्त प्रमाणित हुआ है। इसी तरह से विभिन्न उद्देश्यों के लिये और कई प्रकार के मूलवृन्त निकाले गये है।

रोपण

कलमों से तैयार किये गये जड़दार एक वर्ष पुराने पौधे अगस्त और सितम्बर के महीने में 5 मीटर की दूरी परल गायें जाते है। वैसे दक्षिणी भारत मे जातियो तथा काट–छाट को ध्यान में रखते हुये दूरी कम की जा सकती है। यहा तक कि आम के बाग में इसे फिलर के रूप में भी लगाया जाता है तथा यदि केवल इसी का बाग लगाना हो तो 3–5 मीटर दूरी रखते है। विदेशों में दूरी और बढ़ाते है। यहां तक 12 मीटर तक की जाती है।

खाद एवं उर्वरक तथा पोषण

अंजीर के पौधे को कि तना पोषण तत्व चाहिये इस विषय पर अभी विशेष शोध कार्य नही हुआ है। परन्तु यदि मिट्टी रेतीली हो तथा जीवाश्म की कमी है तो 40 कि0ग्रा0 कम्पोस्ट प्रति पेड़ की दर से देना अत्यन्त आवष्यक है।दक्षिण भारत में नत्रजन के प्रयोग से भी काफी उत्साह वर्धक परिणाम सामने

आये है। पौधों की अच्छी फलत के लिये 25:25:25 नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश का मिश्रण तत्व के रूप में प्रति पेड़ प्रति वर्ष देने से फलत अच्छी होतीहै। यह मात्रा 10 साल तक बढ़ा कर देते रहना चाहिये। दस वर्ष की मात्रा पूरे जीवन काल के लिये निर्धारित करना चाहिये। 3 साल के ऊपर 50 कि0ग्रा0 सड़े गोबर की खाद भी देनी चाहिये।

कटाई, छटाई एवं सिंचाई

यदि रोपण की दूरी कम रखी जाती है तो टाई–छटाई करना नितान्त आवश्यक हो जाता है ताकि बाग को अत्यन्त घना होने से बचाया जा सकता है। दक्षिण भारत में अंजीर के काट–छाट पर विषेश ध्यान दिया जाता है। ताकि उन्नत किस्म के फल प्राप्त हो सकें। यद्यपि अंजीर का पौधा सूखा प्रति रोधी है तथा बरसात एवं जाड़े में जो प्रातिक वर्षा होती है उस से सिंचाई की आवश्यकता पूरी हो जाती है। परन्तु यदि भूमि रेतीली है तो फल पकने के समय 2–3 सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। अंजीर के पौधे की कटाई–छटाई मुख्यतया या तो हेड बैक विधि से की जाती है। मुख्य तने की जमीन से कम ऊचाई पर काट देते है तथा 6–7 शाखाओं को बढ़ने देते है। अतः पौधा झाड़ीनुमा बन जाता है।

ध्यान देने योग्य बात यह कि अंजीर का पौधा वर्ष में दो फसल देता है। बसंत के मौसम में जो फल आते है वे मुख्यतया पिछले वर्ष की हुई शाखाओं पर आते है। अंजीर के पौधे में परागण एवं फलन की दृष्टि से तीन प्रकार के पुष्प होते है। मादा, नर एवं माल पुष्प और किस्म एवं प्रकार के अनुसार अलग–अलग पेड़ों में पाये जाते है। जितने खाने योग्य फल बनते है उनमें मादा पुष्प ही पाये जाते है। अतः इनके परागण के लिये पर पुष्प की आवश्यकता पड़ती है। गालपुष्प भी एक प्रकार का मादा पुष्प होता है, परन्तु इसका वर्तीकाग्र चपटा होता है। पुष्पन एवं परागण के आधार पर अंजीर को तीन भागो मे बांटा जा सकता है।

कैप्री अंजीर

इसमें नर एवं मादा दोनों पुष्प होते है। इसमें परागण छोटी बर्रो द्वारा होता है जिसे कैप्री फिकेषन कहते है। इसीलिये इस अंजीर को कैप्री अंजीर कहते है।

स्माइर्ना अंजीर

इसमें भी बर्रे द्वारा परागण होता है। अतः कैप्री अंजीर के कुछ पौधे इसके निकट होना आवश्यक है।

सामान्य या एड्रियेटिक प्रकार

इसमें परपरागण की आवश्यकता नही होती है तथा फल का विकास अनिषेक जनन द्वारा होता है।

मैनपेड़ों अंजीर

इसमें दो प्रकार के पुष्प होते है। पहले सामान्य तथा दूसरे स्माइर्ना प्रकार के होते है। इस किस्म में पहली फसल में बिना परागण के ही फल विकसित होते है तथा दूसरी में यदि परागण नही होता है तो फल लगाने के बाद गिर जाते है।

जातियां

भारत में मुख्य रूप से जो किस्में उगाई जाती है उसमें पूना, किंग, मसीनीज, बैंगलोर, ब्राउन टर्की आदि है। विदेशी किस्में भारत में प्रायः असफल रही क्योकि ये निमेटोड से प्रभावित होती है।

फलों की तोड़ाई एवं उपज

पौधे लगाने के तीन वर्ष बाद फल देना प्रारम्भ करते है परन्तु पौधों की स्वस्थता को ध्यान में रखते हुये प्रारम्भ में फल नही लेना चाहिये परन्तु तीसरे वर्ष से फल लेना चाहिये। अच्छी फसल सातवे ंवर्ष से प्रारम्भ होती है और लगभग 40 वर्ष तक फल देते है। फलप्रायः मार्च से जुलाई तक की अवधि में पकता है। औसतन प्रत्येक वृक्ष से 300 से 500 फल प्राप्त किये जा सकते है। फलों को प्रायः पेड पर ही पकने दिया जाता है। फलों के परिपक्वन एवं विकास में वृद्धि कारक पदार्थ का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी प्रमाणित हुआ है। विदेशों में किये गये परीक्षणों से विदित होता है कि 20–25 पी0 एम0 जिब्रैलिक अम्ल के छिड़काव से फल एक सप्ताह पहले पक कर तैयार हो जाते है और फलों का स्वाद भी अच्छा रहता है।

कीट रोग एवं उपचार

अंजीर में मुख्यतः तना भेदक एवं पत्ती खाने वाले कीट अधिक हानि पहुचाते है। इसके उपचार हेतु रासायनिक दवाओं का प्रयोग किया जाता है। कीट के अलावा अंजीर में मुख्य रूप से रस्ट की बीमारी लगती है जिसका उपचार 5:5:50 वोर्डो मिश्रण द्वारा किया जाता है। कीड़ों एवं रोग के अलावा

झुलसा आदि तेज लू चलने से हो जाता है। साथ ही फलों की नमी की कमी या वातावरण में नमी की कमी से तुरन्त फल फट जाते है। अतः पर्याप्त नमी का होना नितान्त आवश्यक है।

भण्डारण एवं उपयोग

चूंकि अंजीर का पका फल ही पेड़ से तोडा जाता है अतः सामान्य रूप से यह फल कुछ ही दिनों में खराब हो जाते है। भेजना फलों के लिये दुष्कर होता है। अतः फलों की पैकिंग बांस की टोकरियों में की जाती है। फलों को सुखा कर भी पैक किया जाता है। उपयोग की दृष्टि से फलों का सिरप, जैम, और जैली आदि भी बनाये जाते है।